thearyasamaj.org

No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल. 0011/2012-14

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 71 अंक :35
सृष्टि संवत् 1960853115
7 दिसम्बर 2014
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष-71, अंक : 35, 4/7 दिसम्बर 2014 तदनुसार 24 मार्गशीर्ष सम्वत् 2071 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

सारा संसार तेरा धाम है

ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

धामन्ते विश्व भुवनमधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि।
अपामनीके समिथे य आभृतस्यमश्याम मधुमन्तं ते ऊर्मिम्॥
-ऋ. 4/57/11

शब्दार्थ- हे प्रभो !! **विश्वम्+भुवनम्+अधि** =सारे संसार में **ते** = तेरा **धामन्** = धाम, तेज, ठिकाना है **समुद्रे+ हृदि+अन्तः** = समुद्र-समान विशाल हृदय में तथा **आयुषि+अन्तः** = जीवन सार में तेरा धाम **श्रितम्** = आश्रित है। **अपाम्+अनीके**= जल समुदाय में तथा **समिथे**= सत्संग में **यः**= जो **आभृतः** = भरा गया है, लाया गया है। **ते**= तेरी **तम्** = उस **मधुमन्तम्** = मधुमय, मधुर **ऊर्मिम्**= लहर को **अश्याम**= हम प्राप्त करें।

व्याख्या= सारे संसार में भगवान् का धाम बतला कर कह दिया कि वह भगवान तेरे हृदयरूपी समुद्र में भी हैं (हृदय और समुद्र की समता के लिये लेखक की ब्रह्मोद्योपनिषत् देखिए) हृदय की क्या बात वह जीवन में है। आंखें हों तो उसे देखो। अरे क्यों इधर उधर भटकता है? उस महान् का हृदय में ध्यान कर। छान्दोग्योपनिषत् के अष्टम प्रपाठक के प्रथम खंड में अत्यन्त मनोरम रीति से इस तत्व को समझाया गया है-

अथ यदिदमस्मिन् ब्रह्मपरे दहरं पुण्डरीकं वेश्म दहरोऽस्मिन्नन्तराकाशस्तस्मिन् यदन्तस्तदन्वेष्टव्यं, तद्वाव विजिज्ञासितव्यमिति॥ १॥

तं चेद् ब्रूयुर्यदिदमस्मिन् ब्रह्मपुरे दहरं पुण्डरीकं वेश्म दहरोऽस्मिन्नन्तराकाशः किं तदत्र विद्यते यदन्वेष्टव्यं यद्वाव विजिज्ञासितव्यमिति ॥ २॥

स ब्रूयाद्यावान् वा अयमाकाशस्तावानेषोऽन्तर्हृदये आकाश उभे अस्मिन् द्यावापृथिवी अन्तरेव समाहिते उभावग्निश्च वायुश्च सूर्याचन्द्रमसावुभौ विद्युन्नक्षत्राणि यच्चास्येहास्ति यच्च नास्ति सर्वं तदस्मिन् समाहितमिति ॥ ३॥

यह जो इस ब्रह्मपुर= शरीर में (शरीर को ब्रह्मपुर क्यों कहते हैं, इसके लिये ब्रह्मोद्योपनिषत् देखना चाहिये) चमकीला कमल-समान घर है, उसमें चमकीला आकाश है, उसके भीतर जो है, उसकी खोज करनी चाहिये, उसे जानना चाहिये। यदि ऐसे मनुष्य को लोग कहें कि इस ब्रह्मपुर में चमकीला कमलाकार गृह भी है, और उसमें दहर आकाश भी है, किन्तु उसके भीतर और क्या रहता है, जिसे खोजना चाहिये और जानना चाहिये? तब वह उत्तर देवें, जितना यह बाह्य आकाश है, उतना ही हृदय के भीतर का आकाश है। ये दोनों द्यौ और पृथिवी इसी में समाए हैं, दोनों आग और हवा, दोनों सूर्य और चन्द्रमा, विद्युत तथा नक्षत्र और जो कुछ इस बाह्य आकाश में हैं और जो इसमें नहीं हैं, वह सब इसमें समाया है।

महान् भगवान सारा जहान लेकर इस हृदय में समा रहे हैं। कितना विशाल हैं यह हृदय। दार्शनिक लोग बतलाते हैं-संसार में छह रस हैं। मधुर रस स्वभाव से जल में हैं। मन्त्र का उत्तरार्ध कहता है-जल में जो मिठास तूने भर रखी है तेरी उस मधुभरी लहरी का हम भी स्वाद लें। यह लहरी मुक्ति देती है- **समुद्रादूर्मिर्मधुमां उदारदुपांशुना सममृतत्वमानट्** (ऋग्वेद 4/58/1) हृदय-समुद्र से मधुभरी लहरी उठी और उसने चुपचाप अमृतत्व=मोक्ष, जीवन भली प्रकार प्राप्त करा दिया। चुपचाप, शोर-शार किये बिना मोक्षरस का पान कराने वाली इस मधुभरी लहरी में नहा लो। बन्धन में जकड़ा हुआ मनुष्य तड़प रहा है। संसार के बंधन अनेक रूपों में आकर इसे जकड़ रहे हैं। इस लहरी को उठा, यह बन्धन तोड़ देगी। भगवान् स्वयं कह रहे हैं- **काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः** (ऋग्वेद 4/58/7) ऊर्मियों=लहरियों से पुष्ट होता हुआ सीमाओं को तोड़ देता है। लहरियां उठती ही तब हैं जब हृदय को सचमुच समुद्र बना दिया जाये। समुद्र में पूर्णचन्द्र के समय लहरियां उठती हैं और बांध तोड़ जाती हैं। इसी भान्ति जब हृदय-समुद्र के सामने प्रियतम-पूर्णचन्द्र आता है तब लहरियां उठती हैं और सब सीमाएं, बन्धन टूट जाते हैं।

बन्धनों में बंधे मानव !! हृदय को समुद्र बना, प्रियतम को सामने ला। फिर देख, उठती है न लहरियां और टूटते हैं न बन्धन !!

-स्वाध्याय संदोह से साभार

thearyasamaj.org

स्वाध्याय के लाभ

-ले० स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

मृदुता-मृदुता का अर्थ अत्यन्त स्पष्ट है-मृदोर्भाव: मृदुता-कोमलता का भाव, अतीक्षण होना। मृदु व्यक्ति सर्वदा सबका प्रिय होता है। वह कहीं भी हानि नहीं उठाता। बड़ी-से-बड़ी आपत्तियां भी उसका बिगाड़ नहीं कर पातीं। तूफान आने पर सीधे खड़े वृक्ष गिर जाते हैं, टूट जाते हैं। वह घास जो अत्यन्त मृदु होती है तूफान आने पर नम्रीभूत हो जाती है। तूफान के शान्त होते ही वह फिर अपना सिर उन्नत करके लहलहाने लगती है।

मृदुताशील में एक और भी विशेषता रहती है कि उसे गुरूजन अपने गुणों के अनुरूप ढाल सकते हैं। अथवा वह मृदु व्यक्ति ही अपने को स्वयं गुरूजनों के सांचे में ढाल देता है। मृदुता की यह सबसे बड़ी विशेषता है कि उससे सम्पन्न व्यक्ति में गुणाधान करते हुए कुछ भी कष्ट नहीं उठाना पड़ता। मृदुता गुणी को सर्वगुण-सम्पन्न बना देती है।

अपारुष्यम्-छठा और सातवां शील मृदुता और अपारुष्यम्, एक ही गुण जंचते हैं, परन्तु अन्तर है। मृदुता उस कोमलता को कहते हैं, जो हृदय और मन से उठती है, परन्तु अपारूष्यम् वह कोमलता है, जो वाणी में समा गई हो। पुरूष कहते हैं निष्ठुर वचन को। निष्ठुर और कठोर वचन की भावना को पारूष्य कहते हैं। उससे रहित होना अपारूष्य है। परुषवाक् व्यक्ति की जिह्वा पर वह विष होता है, जिसमें बुझकर निकला हुआ प्रत्येक वचन अगले के मर्म को भेद देता है। परेषां देश-जाति-कुल-विद्या-शिल्प-रूप-वृत्त्याचार-परिच्छेद-शरीर-कर्मजीवितां प्रत्यक्षदोषवचनम् पारूष्यम् इति वदन्ति।

अन्यों के देश, जाति आदि का नाम लेकर भर्त्सना करना, पुरूष वचन कहना ही पारूष्य भाव है। कर्ण और शल्य के विवाद में एक-दूसरे पर इसी प्रकार की कीचड़ उछाली गई थी। कर्ण कहता था, "शल्य! मैं जानता हूं कि तुम जिस देश के राजा हो, वहां के लोग कितने असभ्य और आवारा होते हैं।" शल्य कहता था, "कर्ण! मैं जानता हूं कि तुम किस कुल से हो। तुम्हारे जन्म का भी पता है। तुम कानीन (हराम के) हो इत्यादि। जाति, कुल, रूप, वृत्ति, आचार, पहरावा, आदि के कारण किसी पर दोषारोपण करना, पुरूष वचन उंडेलना ही पारूष्य है। जो इससे रहित होता है, वह अपारूष्य शील से युक्त होता है।"

शिशुपाल ने श्री कृष्ण को जो सौ-सौ गालियां दी थीं, वे कोई मां, बहन, बेटी की गालियां दी थीं ? वहां भी तो यही श्री कृष्ण के भिन्न-भिन्न जाति, कुल, विद्या आदि को लेकर पुरूष वचन का ही प्रयोग किया था। बस, इसका जिसमें अभाव होता है, वह अतिशय शीलवान् व्यक्ति कहलाता है। जब व्यक्ति में ब्रह्मण्यता, अनसूयता, मृदुता और अपारूष्य आ जाते हैं, तब मित्रता नामक शील का उदय होता है। जिसमें असूया नहीं, उसके अन्दर-बाहर मृदुता होती है, तथा वाणी में माधुर्य आ जाता है तब वह मित्रताशील से अलंकृत हो जाता है।

मित्रता-वेद में भक्त की कामना है-मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्: मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे। य० ३६।१८-सभी प्राणी मुझे मित्र दृष्टि से देखें, मैं भूतमात्र को मित्र दृष्टि से देखूं। हम सभी परस्पर मैत्रीभाव से एक-दूसरे को देखें। इसी बात को श्री कृष्ण ने भी (गीता में) कहा है-"अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्र: करुण एव च। निर्ममो निरहंकार: समदु:ख-सुख: क्षमी" (१२/१३)। जब व्यक्ति प्राणिमात्र से द्वेष त्याग देता है, तब वह सबका मित्र हो जाता है। फिर तो दोनों ओर से स्नेह-प्रवाह बहने लगता है। वह स्नेह कभी तो आंखों में अश्रु का रूप धारण कर लेता है और कभी वाणी में गद्गद गिरा का रूप धारण कर बहने लगता है। वह हर किसी का मान करता है और सब कोई उसका मान करने लगते हैं। मिनोति मानं करोति इति मित्रम्-जो अपने से छोटे हों उनके प्रति कृपालु हो जाता है और इस मित्रताशील के कारण वह सर्वप्रिय बन जाता है। नीतिकार ने क्या ही अच्छा कहा है-केनामृतमिदं सृष्टं मित्रमित्यक्षर-द्वयम्। आपदां च परित्राणं शोकसंतापभेषजम्। इस अक्षरद्वय से निष्पन्न 'मित्र' शब्द का किसने निर्माण किया है ? जो आपत्तियों से परित्राण करने वाला और शोक और संताप की परमौषध है।

प्रियवादित्वम्-व्यक्ति में उपर्युक्त ये सभी शील सुनने से ही आते हैं। इनमें से जब व्यक्ति में मृदुता, अपारूष्य और मित्रता आ जाते हैं, तब अगला शील "प्रियवादित्वम्" (प्रिय बोलना) भी आ जाता है। बहुश्रुत का एक यह भी गुण है। मनु ने कहा है कि व्यक्ति सत्य और प्रिय बोले। ऐसा सत्य न बोले जो किसी को अप्रिय लगे-सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्। (मनु० ४।३८) अपारूष्यम् में और प्रियवादित्व में केवल इतना अन्तर है कि पारूष्य वचन वह है, जो किसी में दोष है नहीं, उसका आरोप करके उसकी निन्दा व भर्त्सना करना। तात्पर्य यह है कि वक्ता की वाणी में जहां कठोरता और असत्य है, वहां हृदय में भी कठोरता और ईर्ष्या है। प्रियवादित्व-शील वह गुण है कि वक्ता सत्य तो कह रहा है परन्तु उसे भी प्रिय ढंग से। अन्धे को अन्धा न कहकर प्रज्ञाचक्षु कहता है। प्रियवादी व्यक्ति अनन्त पुण्यों का लाभ करता है। जो फल सहस्रों गौओं के दान का है, जो फल भूमिदाताओं के दान का है और जो फल सुवर्ण का दान करने वाले को मिलता है, वह एक अकेले प्रियवादी व्यक्ति को मिलता है।

गोसहस्र-प्रदातारो भूमिदातार एव च।
ये सुवर्ण-प्रदातारस्तथा सर्वेप्रियंवदा:।

कृतज्ञता-शीलों में दसवां शील कृतज्ञता है। संसार में कृतघ्नता सबसे बड़ा अपराध है। कृतघ्ने नास्ति निष्कृति: कहकर कृतघ्न व्यक्ति के लिए संसार में कोई प्रायश्चित नहीं बताया गया। इसलिए यदि कोई व्यक्ति सुनने के फलस्वरूप शीलों में से एक इस कृतज्ञता मात्र को भी धारण कर ले, तो समझना चाहिए उसने बहुत कुछ प्राप्त कर लिया, अत: किसी के किए उपकार को कदापि न भुलाए। किसी के अपने प्रति किये हुए उपकार को जानना और स्वीकार करना यही बड़ी कृतज्ञता है-**कृतमुपकृतं जानाति स्वीकारोति य: स: कृतज्ञ:।**

शरण्यता-शीलों का वर्णन करते हुए महामुनि हारीत कहते हैं, शरण्यता भी एक महान् शील है। यदि शत्रु भी अपनी शरण में आए, तो उसे शरण दो। जो मित्र है, उसका तो कहना ही क्या! शरण का द्वारा सदा खुला रहना चाहिए। ब्राह्मण को शर्मा इसलिए कहते हैं कि वह सबकी, दीन-दुखियों की शरण बन जाता है। जिसने बहुत पढ़ और सुनकर भी शरण का द्वार बन्द कर दिया, वह देव तो क्या, मनुष्य भी नहीं कहला सकता, वह तो असुर है। किसी को भी हेय, निम्न, नीच नहीं समझना चाहिए। मनुष्य सभी की शरण, आश्रय और ठिकाना बन जाए और धन्य कहलाए।

कारूण्य-शीलों में जहां मृदुता, मित्रता, कृतज्ञता, शरण्यता आदि महत्त्वपूर्ण गुण हैं, वहां कारूण्य भी एक आवश्यक शील है। करूणा नामक शील मनुष्य का महागुण है, जिससे उसकी मानवता में निखार आ जाता है। दूसरों को दु:ख में देखकर कृपा, दया और अनुकम्पा दिखाना करूणा है, दूसरों के दु:ख को दूर करने की इच्छा करूणा है। "परदु:खहारिणीच्छा कारूण्यम्।" संसार में ऐसे भी व्यक्ति हैं जो निष्कारण ही किसी को पीड़ा पहुंचाते हैं, ऐसे भी महात्मा हैं जो निष्कारण ही अन्यों को सुख पहुंचाते हैं और उनके दर्द को अपना बना लेते हैं। ऐसे ही महान् पुरूषों के लिए अमीर ने क्या अच्छा कहा है-

कांटा लगे किसी के तड़पते है हम, अमीर।
सारे जहां का दर्द हमारे जिगर में है।

कहा भी है-

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दु:खतप्तानाम्प्राणि-नामार्तिनाशनम्॥

करुणाशील व्यक्ति ही सारे जहां का दर्द ले सकते हैं, अत: बहुश्रुत में कारूण्य नामक शील उदित होता है। यही उसका फल क्या कम है ? शील-वृत्त-फलं श्रुतम्।

अब रह गया शीलों में अन्तिम और शायद सर्व-प्रमुख शील प्रशान्ति। यदि यह गुण नहीं तो सब शील व्यर्थ है।

प्रशान्ति-यदि परिणाम शान्ति के रूप में दृष्टिगोचर हो तो समझना चाहिए कि आपका आरम्भ ठीक था। (क्रमश:)

thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

रामपाल जैसे ढ़ोगी बाबाओं तथा बढ़ते पाखण्ड़ के विरूद्ध आर्य समाजें अभियान चलाएं

पाखण्ड़ी बाबा रामपाल की पोल खुलने के बाद, उसके रहस्यों का पर्दाफाश होने के बाद अब आर्य समाजों को अपने-अपने क्षेत्र में पाखण्ड़ और अन्धविश्वास के खिलाफ अभियान शुरू कर देना चाहिए। रामपाल ने जिस प्रकार से एक सम्प्रदाय बनाकर पाखण्ड़ और अन्धविश्वास फैलाया था, भोली-भाली जनता को मूर्ख बनाकर अपने जाल में फंसाया था, आश्रम के नाम पर संदिग्ध गतिविधियां शुरू की थी। उसका अन्त और पतन उसकी गिरफ्तारी के बाद शुरू हो गया है। धीरे-धीरे रामपाल के सभी कुकृत्यों से पर्दा उठ रहा है। रामपाल ने जिस प्रकार आश्रम के अन्दर राष्ट्र विरोधी गतिविधियां शुरू की थी, भारी मात्रा में हथियार इकट्ठे किए थे, नवयुवकों को प्रलोभन देकर उन्हें अपने जाल में फंसाया था, उसे देखकर लगता है रामपाल के इरादे कुछ और ही थे। रामपाल की इन संदिग्ध गतिविधियों को देखकर लगता है कि उसके तार कहीं और ही जुड़े हुए हैं। पुलिस की कस्टड़ी में रहकर रामपाल के कुकृत्यों का एक-एक करके रहस्य खुलता जा रहा है कि रामपाल की संत का चोला पहनने के पीछे क्या मंशा थी। क्यों वह जनता को गुमराह कर रहा था, आश्रम के रूप में किला बनाने के पीछे उसके क्या इरादे थे, नवयुवकों को शस्त्र चलाने की शिक्षा देना और उन्हें अपने आश्रम में भर्ती करके वह क्या दिखाना चाहता था। ये प्रश्न ऐसे हैं जिनके उत्तर सामने आने अभी बाकि हैं।

आर्य समाज की स्थापना करने के पीछे महर्षि दयानन्द का यही उद्देश्य था कि संसार से अविद्या का नाश हो और विद्या की वृद्धि हो। महर्षि दयानन्द ने उस समय आर्य समाज की स्थापना की जब संसार में वेद विद्या का लोप हो गया था, धर्म के नाम पर समाज में अनेक प्रकार के मत और सम्प्रदाय फैल गए थे। धर्म के नाम पर अनेक कुरीतियां और पाखण्ड़ फैल रहे थे। महर्षि दयानन्द ने केवल धर्म के क्षेत्र में ही नहीं सामाजिक क्षेत्र में भी अपनी आवाज उठाई। बाल विवाह के विरूद्ध उन्होंने अपनी आवाज उठाई, नारी शिक्षा के लिए उन्होंने संघर्ष किया। इस प्रकार आर्य समाज ने केवल एक ही क्षेत्र में सीमित न रहकर सभी क्षेत्रों में अपना योगदान दिया। इस प्रकार आर्य समाज ने अपने शुरूआती दौर में पाखण्ड़ों, कुरीतियों का जमकर विरोध किया। अपने-अपने मत को लेकर जो धर्मगुरू बन बैठे थे, भोली-भाली जनता को मूर्ख बनाकर अपने जाल में फंसा लेते थे और धर्म के नाम पर उन्हें आपस में लड़ाते थे। ऐसे तथाकथित पाखण्ड़ी धर्मगुरूओं का महर्षि दयानन्द ने जमकर विरोध किया। इस प्रकार आर्य समाज ने अपने सार्वभौमिक नियमों के कारण देश की आजादी में भी अपना योगदान दिया।

आज फिर वही समय आ गया है कि आर्य समाजें अपने-अपने क्षेत्र में पाखण्ड़ और अन्धविश्वास के खिलाफ अभियान चलाएं। सभी आर्य समाजों के अधिकारी सक्रिय होकर वेद प्रचार के कार्य को गति दें ताकि रामपाल जैसे तथाकथित बाबाओं का असली चेहरा समाज के सामने आए। धर्म की आड़ में जो जनता को गुमराह करते हैं, एक सम्प्रदाय के लोगों को दूसरे सम्प्रदाय के विरूद्ध भड़काते हैं, समाज में ईर्ष्या, द्वेष की भावना को बढ़ावा देते हैं। रामपाल ने जिस प्रकार धर्म के नाम पर अपने आश्रम में राष्ट्र विरोधी गतिविधियां चला रखी थी उसका पर्दाफाश होना जनता के लिए एक सबक है जो बिना सोचे विचारे हर किसी को गुरू, सन्त या महात्मा का दर्जा देती है। आर्य समाज का यह कर्त्तव्य बनता है कि वे ऐसे मठाधीश बाबाओं का बहिष्कार करें जो अपने स्वार्थ के लिए, अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए, ऐशो आराम की जिंदगी जीने के लिए धर्म का चोला पहनकर जनता को गुमराह करते हैं। ऐसे ढ़ोगी संत और बाबा दूसरों को मोह माया त्यागने का उपदेश देकर अपने लिए ऐशो आराम के साधन इकट्ठा करते हैं। जो स्वयं मार्ग से भटके हुए हैं वे दूसरों को क्या मार्ग दिखा सकते है। आज समाज में ऐसे बाबाओं की बाढ़ आ गई है। दिन प्रतिदिन ऐसे बाबाओं की संख्या में वृद्धि हो रही है। हर गांव में, हर शहर में कोई न कोई बाबा अपना डेरा, मठ, आश्रम बनाकर बैठ जाते है और लोगों को बहकाना शुरू कर देते हैं।

इन परिस्थितियों में आर्य समाज के अनुयायियों का कर्त्तव्य बनता है कि वे जागरूक होकर अपने-अपने क्षेत्र में कार्य करें। अपने क्षेत्र की आर्य समाज को सक्रिय करके जन जागरण अभियान चलाएं। संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। इस उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए आज जागरूक होने की आवश्यकता है। जिस प्रकार रामपाल का असली चेहरा समाज के सामने आया है उसी प्रकार अन्य ढ़ोगी जो धर्म की आड़ लेकर अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं, उनका असली चेहरा भी समाज के सामने आए। प्रत्येक आर्य समाज अपने क्षेत्र में आने वाले सभी गांव तथा अन्य स्थानों पर ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन करें जिससे जनता के अन्दर जागरूकता आए। पूरे वर्ष के कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करके उसी के अनुसार कार्य करें। वैदिक सिद्धान्तों के द्वारा, वैदिक साहित्य के द्वारा हम जनता को जागरूक करें। महर्षि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश तथा अन्य ग्रन्थों को जनता में बाँट कर उन्हें आर्य समाज से अवगत कराएं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के द्वारा वैदिक साहित्य, महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित सत्यार्थ प्रकाश, व्यवहारभानू, गोकरूणानिधि, आर्योद्देश्यरत्नमाला आदि ग्रन्थ आधे मूल्य पर उपलब्ध कराए जाते हैं। आर्य समाज से सम्बन्धित साहित्य सभा के द्वारा आधे मूल्य पर दिया जाता है ताकि जनता में वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार हो। वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। हमारे कार्यक्रम केवल दिखावे के लिए नहीं अपितु रचनात्मक होने चाहिए। अधिक से अधिक लोगों को आर्य समाज के साथ जोड़ने का प्रयास करें। अगर आर्य समाजों के द्वारा प्रचार कार्य में तेजी न लाई गई तो रामपाल जैसे पाखण्ड़ी बाबा इसी तरह राष्ट्र विरोधी कार्य करते रहेंगे, लोगों को गुमराह करते रहेंगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों, शिक्षण संस्थाओं के पदाधिकारियों तथा सदस्यों से निवेदन है कि वे अपने उत्तरदायित्व का पालन करते हुए अपनी-अपनी आर्य समाजों तथा स्कूलों, कॉलेजों में प्रचार कार्य में गति लाएं। आर्य समाजों में सदस्यता अभियान चलाएं। स्कूलों में बच्चों को विषयों से सम्बन्धित पढाई के साथ-साथ वैदिक सिद्धान्तों से भी परिचित कराएं। अपनी संस्कृति, सभ्यता, मातृभूमि और मातृभाषा के प्रति उनके अन्दर आदर उत्पन्न करें। अपने महापुरूषों के जीवन चरित्र को पढ़ाकर उन्हें राष्ट्रहित के कार्य करने की प्रेरणा दें। आशा है कि सभी अपने-अपने उत्तरदायित्व का पालन करते हुए महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार करेंगे, घर-घर वेद की ज्योति जलाएंगे और कृण्वन्तोविश्वमार्यम् के लक्ष्य को पूरा करेंगे।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

आर्य समाज बंगा का 33वां वार्षिकोत्सव

आपको यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि आर्य समाज बंगा का 33वां वार्षिकोत्सव दिनांक 12 दिसम्बर 2014 से 14 दिसम्बर 2014 तक आर्य समाज मन्दिर में बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस उत्सव में राष्ट्रीय प्रचारक आचार्य रामानन्द जी शिमला, डा. स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती मथुरा, पं. अमित शास्त्री नवांशहर, ब्रह्मचारी सोमवीर आर्य दिल्ली, पं. सुखपाल आर्य भजनोपदेशक सहारनपुर पधार रहे हैं। जो अपने मुखारविन्द से जीवन कल्याण का मार्ग प्रशस्त करेंगे। आप सभी से प्रार्थना है कि सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित कार्यक्रम में पधार कर धर्मलाभ उठाएं। समारोह की अध्यक्षता चौधरी ऋषिपाल सिंह एडवोकेट उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब करेंगे। सम्मेलन का शुभारम्भ डा. वी. के. अरोड़ा नवांशहर ध्वजारोहण के द्वारा अपने कर-कमलों से करेंगे। ***-शादी लाल महेन्द्रु प्रधान आर्य समाज बंगा***

thearyasamaj.org

सुख-दु:ख

ले० डा. एच. कुमार कौल, डायरैक्टर गांधी आर्य सी. सै. स्कूल, बरनाला

मैक्समूलर लिखते हैं-''भारतीय दर्शन के शास्त्रों में और धर्मशास्त्रों में भी सर्वसम्मत रूप से कहा गया है, कि संसार दु:ख से भरा है और इस दु:ख को समझकर दूर करना चाहिए।'' सांख्य दर्शन में भी दु:ख की निवृत्ति को जीवन का चरम लक्ष्य घोषित किया गया है। इसीलिए कहा जाता है-

''हेयं दु:खमनागतम्॥''

कहने का भाव है, वह दु:ख त्याज्य है, जो अभी आया नहीं जो भविष्य में आने वाला है।

योग दर्शन के अनुसार जो दु:ख सामने है, उसे तो भोगना ही है, परन्तु जो दु:ख बाद में आ सकता है उसे दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। उनके अनुसार मोक्ष की प्राप्ति से ही दु:ख की पूर्ण निवृत्ति हो सकती है।

किन्तु भारतीय दार्शनिकों ने कभी निराशावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत नहीं किया। उनका मानना है कि दु:ख निष्प्रयोजन नहीं है। स्वामी दयानन्द जी का दु:ख के विषय में भिन्न मत है, कि संसार में इतना दु:ख दर्द नहीं है। जितना प्राय: चिन्तक लोग बता देते हैं। यह संसार दयालु सर्वोपकारी ईश्वर की रचना है। जिसने यहां दु:ख से सुख को अधिक बनाया है। वे कहते हैं, ''जो सृष्टि के दुख सुख की तुलना की जाए तो सुख कई गुणा अधिक होता है, और बहुत से पवित्रात्मा जीव मुक्ति के साधन कर मोक्ष के आनन्द को भी प्राप्त होते हैं।'' दु:ख भी कृपालु परमात्मा ही देता है। जैसे वह सुख देता है। हमारे खाते में जो सुख और दु:ख है, दोनों उसी के दिये हैं, दु:ख यद्यपि कम है, तथापि चुभता अधिक है, और इसका अधिक लगना भी अर्थपूर्ण है। सुख के हजारों क्षणों के बीच दु:ख के कुछ क्षण आते हैं, तो इससे हमारा दृष्टिकोण निराशावादी हो जाता है, जो कि गलत है। क्योंकि दु:ख के पीछे भी वही प्रयोजन है जो सुख के पीछे है। सुख दु:ख तो हमारे कर्मों के फलस्वरूप हमें किसी अन्य शक्ति द्वारा दिये जाते हैं। दोनों के मूल में एक ही विचार है। दयालु परमात्मा हमारे मार्गदर्शक की भांति हमें सत्कर्मों के लिए प्रोत्साहित और दोषों के लिए हतोत्साहित करता है।

कठोपनिषद् के वचन हैं-

1. क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्ग पथस्तकव्यों वदन्ति॥ अर्थात् तत्वज्ञानी लोग मोक्ष मार्ग को वैसा ही दुर्गम बतलाते हैं, जिस प्रकार छुरे की धार तीक्ष्ण और दुस्तर होती है। स्वामी जी का भी मानना है, कि जीवन का परम लक्ष्य अर्थात् दु:खों से छुटकारा प्राप्त करना सरल नहीं होता। हमें कंटीले घेरों में तलवार की धार पर चलकर ही इस लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है क्योंकि संसार के आकर्षण कम प्रभावशाली नहीं है। इस संसार में पग-पग पर सर्वहितैषी ईश्वर अपनी दया और कृपापूर्वक हमारा मार्गदर्शन करता है, किन्तु हम संसार में इतने खो जाते हैं, कि उसकी शिक्षा पर ध्यान नहीं देते। परिणामस्वरूप निराशावाद के बादल हमें घेर लेते हैं, और हम घोर अंधकार में डूब जाते हैं। जब कर्त्तव्य का भाव घट जाता है, तो सुख ही जीवन का लक्ष्य बन जाता है, और इसका स्थान स्वार्थपूर्ण मोह ले लेता है। ऐसा मोह पाप को जन्म देता है, और पाप दु:ख को। परन्तु इस विषय में 'सत्यार्थ प्रकाश' में स्पष्ट लिखते हैं-

1. नाविरतो दुश्चरितान्नाशान्तो नासमाहित:।
नाशान्तमानसो वापि प्रज्ञानेनैमाप्नुयात्॥

जो दुराचार से पृथक् नहीं, जिसको शान्ति नहीं, जिसकी आत्मा योगी नहीं और जिसका मन शांत नहीं, वह सन्यास ले कर भी प्रज्ञान से परमात्मा को प्राप्त नहीं होता। उपर्युक्त वचन से स्पष्ट वर्णन है, कि ब्रह्मचर्य का जीवन पूर्ण करके तप और श्रद्धा का संकल्प लेकर ईश्वर को जानने हेतु मुनि बने और अन्त में आगे साक्षात्कार करने हेतु संसार का त्याग करके सन्यासी बने।

सांसारिक ऐश्वर्यों के प्रति मोह का त्याग ही जीवन का अन्तिम सत्य है, और जीवन का चरम सुख।

स्वामी जी का कहना कि ''अनन्त आनन्द को भोगना का असीम सामर्थ्य, कर्म और साधन और जीव में नहीं इसलिए अनन्त सुख नहीं भोग सकता। मोक्ष सब सीमाओं का टूटना नहीं है। अविद्या ही मनुष्य को सुख प्राप्त करने से रोकती है, जीवधारी का प्रकृति के पदार्थों में सुख खोजना ही अविद्या है। जब जीवात्मा ज्ञान प्राप्त कर लेती है, तो वह दु:ख सुख के बन्धन से मुक्त हो जाती है। जैसे रात के बाद दिन, दिन के बाद रात का चक्र चलता है। उसी प्रकार सुख के बाद, दु:ख, दु:ख के बाद सुख का चक्र चलता है।''

वेदों के पथ पर चलो

पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार भजनोपदेशक आर्य सदन बहीन, हरियाणा

जगत गुरू दयानन्द थे, ईश्वर भक्त महान।
देश भक्त धर्मात्मा, वेदों के विद्वान्॥
वेदों के विद्वान, सत्यवादी तपधारी।
मानवता के पुंज, साहसी अरू ब्रह्मचारी॥
किया वेद प्रचार, न कष्टों में खबराएं।
दुखिया दीन अनाथ, हर्ष से गले लगाए॥

अंग्रेजों का राज्य था, भारत था परतंत्र।
दुष्ट विधर्मी लोग नित, रचते थे षडयंत्र॥
रचते थे षडयंत्र, दुखी थी जनता भारी।
लाखों गऊएं यहां, नित्य जाती थी मारी॥
विधवाओं का कशन-क्रन्दन चहुं ओर था।
दावन दल का यहां, सुनो सब बहुत जोर था॥

स्वामी जी ने गर्जकर, कहा सुनो धर ध्यान।
बंधो संगठन सूत्र में, यदि चाहो कल्याण॥
यदि चाहो कल्याण, सभी मिल कदम बढ़ाओ।
पापी है अंग्रेज, ? को मार भगाओ॥
गऊ गुणों की खान, करो गऊओं की सेवा।
जाति-पाति दो मिटा, मिलेगी पावन मेवा॥

नारी की पूजा करो, सच्ची देवी मान।
नर्क वहां होता जहां, नारी का अपमान॥
नारी का अपमान, करे वे दुख पाते हैं।
हो जाता है पतन, अनाड़ी पछताते हैं॥
रहता देश गुलाम, अगर ऋषि यहां न आते।
ऋषियों के सुत-सुता, कभी भी सुख न पाते॥

दीवाली है दे रही, हमें आज सन्देश।
जुटो वेद प्रचार में, तजो ईर्ष्या द्वेष॥
तजो ईर्ष्या द्वेष जगत में नाम कमाओ।
बनकर श्रद्धानन्द, शुद्धि का चक्र चलाओ॥
लेखराम, गुरूदत्त बनो, निज धर्म निभाओ।
स्वयं आर्य बनो, विश्व को आर्य बनाओ॥

thearyasamaj.org

सत्यार्थ प्रकाश के कुछ उपयोगी अंश

ले० खुशहाल चन्द्र आर्य गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स, 180 महात्मा गांधी रोड, कोलकत्ता

डॉ० भवानी लाल जी भारतीय ने ''दयानन्द सूक्ति-मुक्तावली'' नामक पुस्तक लिखी है। इसको मैंने आदि से अन्त तक अच्छी प्रकार पढ़ा है। पुस्तक अति उत्तम है। मैं यह समझता हूं कि भारतीय जी ने इस पुस्तक को लिखकर केवल आर्य समाजियों का ही नहीं बल्कि पूरे मानव-समाज का उपकार किया है। इसमें भारतीय जी ने महर्षि दयानन्द कृत लगभग सभी ग्रन्थों का सार संक्षिप्त में लिखा है। साथ ही इस ग्रन्थ की उत्तमता इसलिए और अधिक बढ़ जाती है कि इसमें पुस्तकों के अतिरिक्त पूना में दिये पन्द्रह, प्रवचन, मुम्बई प्रवचन तथा कुछ शास्त्रार्थों का भी वर्णन है जिससे पुस्तक रोचक बन गई है। मैंने इस लेख में सत्यार्थ प्रकाश के कुछ उपयोगी अंशों का उल्लेख किया है, कृपया पाठक गण इनसे लाभ उठावें।

1. आत्मा का स्वभाव-मनुष्य की आत्मा सत्यासत्य को पालने वाला है, तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है।

2. महर्षि की प्रतिज्ञा-यद्यपि मैं आर्यवर्त में उत्पन्न हुआ हूं और बसता हूं तथापि जैसे इस देश के मत-मतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हूं। वैसे ही दूसरे देशस्थ व अन्य मतों वालों के साथ भी बर्तता हूं। जैसे स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में बर्तता हूं वैसा विदेशियों के साथ भी। मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती होता तो आजकल के स्वमत की स्तुति मण्डन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा, हानि और बन्ध (रोक, अवरोध) करने में तत्पर होते हैं, वैसे मैं भी होता, परन्तु ऐसी बातें मनुष्य पन के बाहर हैं।

3. सर्वशक्तिमान का अर्थ-सर्वशक्तिमान, शब्द का यही अर्थ है कि ईश्वर अपने काम अर्थात् उत्पत्ति, पालन, प्रलय आदि और सब जीवों के पुण्य, पाप की यथायोग्य व्यवस्था करने में किंचित् भी किसी की सहायता नहीं लेता।

4. प्रार्थना और पुरूषार्थ-जो मनुष्य जिस बात के लिए प्रार्थना करता है, उसको वैसा ही प्रयत्न करना चाहिए। अर्थात् जैसे सर्वोत्तम बुद्धि की प्राप्ति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करे तब उसके लिए जितना अपने से प्रयत्न हो सके उतना किया करे। अपने पुरूषार्थ के बाद यदि वह वस्तु नहीं मिलती है वह ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए।

5. यदा यदा हि धर्मस्य का अर्थ-श्री कृष्ण धर्मात्मा लोगों की और धर्म की रक्षा करना चाहते थे, कि मैं युग-युग में जन्म लेकर श्रेष्ठों की रक्षा और दुष्टों का नाश करूं। क्योंकि ''परोपकाराय सतोवि भूतय:'' के लिए ही सत्पुरूषों का तन, मन, धन होता है। तथापि इससे श्री कृष्ण ईश्वर नहीं हो सकते।

6. आर्य ही, आर्यवर्त्त के मूल निवासी हैं-किसी संस्कृत ग्रन्थ में व इतिहास में कहीं नहीं लिखा है कि आर्य लोग ईरान से या मध्य एशिया से आए और यहां के जंगली लोगों से लड़कर, विजय प्राप्त करके इस देश के राजा हुए। आर्यों के आने से पहले इस देश का नाम क्या था, कोई नहीं बतला सकता तब विदेशियों का लेख माननीय कैसे हो सकता है।

7. स्वदेशी राज्य ही सर्वोपरि होता है-कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वही सर्वोपरि व उत्तम होता है। विदेशियों का राज्य, चाहे कितना भी पक्षपात् शून्य, प्रजा पर माता, पिता के समान कृपा, न्याय और दया रखने वाला हो, तब भी पूर्ण सुखदायक नहीं हो सकता।

8. जन्म और मरण क्या है-जब शरीर से जीव निकलता है, उसी का नाम मृत्यु और शरीर के साथ संयोग होने का नाम जन्म है। जब जीव, शरीर छोड़कर कुछ समय के लिए यमालय अर्थात् आकाशस्थ वायु में रहता है। तत्पश्चात् ईश्वर की न्याय व्यवस्था के अनुसार जीव, माता के गर्भ में जाता है। यम नाम वायु का है। गरूड़ पुराण का कल्पित यम नहीं है।

9. स्वर्ग और नरक क्या है-सुख, विशेष का नाम स्वर्ग और विषय, दृष्टि में फंसकर दु:ख विशेष पाने का नाम नरक कहलाता है। जो सांसारिक सुख हैं वह सामान्य स्वर्ग और जो योग-साधना तथा अच्छे कर्मों द्वारा जो परमेश्वर की प्राप्ति से आनन्द है, वही विशेष स्वर्ग या मोक्ष कहलाता है।

10. हमारी पराधीनता के कारण-विदेशियों का आर्यवर्त्त में राज्य होने के कारण-आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना-पढ़ाना, जन्म से जाति यानि वर्ण मानना, कर्म से नहीं बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्याभाषणा-दिकुलक्षणम वेद विद्या का प्रचार न होना आदि है। जब आपस में भाई-भाई लड़ते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है।

11. गौ वध से हानि-जब आर्यों का राज्य था, तब ये महोपकारक गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे। तभी आर्यावर्त्त व अन्य भूगोल के देशों में बड़े आनन्द में मनुष्यादि प्राणी वर्तते थे। जब से विदेशी, मांसाहारी इस देश में आकर गौ आदि पशुओं को मारने वाले मद्यपानी राज्यधिकारी हुए हैं, तब से क्रमश: आर्यों के दु:ख की बढ़ौतरी होती जाती है।

12. मनुष्य कौन होता है-मनुष्य उसी को कहना जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दु:ख और हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं, किन्तु अपने पूर्ण सामर्थ्य से धर्मात्माओं की, चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुण रहित क्यों न हो, उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहें चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान् जहां तक हो सके वहां तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करें। इस काम में चाहे कितना भी दारूण, दु:ख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जाएं, परन्तु इस मनुष्य रूप धर्म से पृथक् कभी न होवे।

13. वैदिक धर्म सबसे प्राचीन-यह सिद्ध बात है कि पांच सहस्त्र वर्षों से पूर्व वैदिक धर्म से भिन्न दूसरा कोई भी धर्म नहीं था। क्योंकि वेदोक्त सब बातें विद्या अविरुद्ध हैं। वेदों की अप्रवृत्ति होने के कारण महाभारत युद्ध हुआ। वेदों की अप्रवृत्ति से अविद्यान्धकार के भूगोल में विस्तृत होने से मनुष्यों की बुद्धि भ्रमयुक्त होकर, जिसके मन में जैसा आया वैसा मत चलाया। जिससे मानव-मात्र की बड़ी हानि हुई।

14. वेदोक्त धर्म से मानवता का हित-महाभारत से पूर्व सर्व भूगोल में एक ही वेदोक्त धर्म था। उसी में सब की निष्ठा थी और एक दूसरे का सुख-दु:ख, हानि लाभ आपस में अपने समान समझते थे। तभी भूगोल में सुख था। अब तो बहुत से मत वाले होने से बहुत दु:ख और विरोध बढ़ गया है। इसका निवारण करना बुद्धिमानों का काम है।

15. आर्यों के पतन के कारण-स्वयंभुव राजा से लेकर पाण्डव पर्यन्त आर्यों का चक्रवर्ती राज्य रहा। तत्पश्चात् आपस के विरोध से लड़कर नष्ट हो गए। क्योंकि इस परमात्मा की सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान् लोगों का राज्य बहुत दिन नहीं चलता। और यह संसार की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि जब बहुत सा धन असंख्य प्रयोजन से अधिक हो जाता है तब आलस्य, पुरूषार्थरहितता, ईर्ष्या-द्वेष, विषयासक्ति और प्रमाद बढ़ता है। इससे देश में विद्या सुशिक्षा नष्ट होकर दुर्गुण और दुष्ट व्यसन बढ़ जाते हैं।

16. महाभारत से हानि-जब बड़े-बड़े विद्वान, राजा-महाराजा, ऋषि महर्षि लोग, महाभारत युद्ध में बहुत से तो मारे गये और बहुत से मर गए तब विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार नष्ट हो चला। ईर्ष्या, द्वेष, अभिमान आपस में करने लगे। जो बलवान हुआ वह देश को दाब कर राजा बन बैठा। इस प्रकार सर्वत्र आर्यावर्त्त देश खण्ड-खण्ड राज्यों में बंट गया।

17. सार्वभौम मानवीय एकता कैसे हो-जब तक इस मनुष्य जाति में मिथ्या मतमतान्तरों का होना नहीं छूटेगा, तब तक लोगों को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विद्वताज्जन ईर्ष्या, द्वेष छोड़ सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहें तो हमारे लिए यह बात असाध्य नहीं है। यह वैदिक धर्म के मानने से ही सम्भव है।

thearyasamaj.org

मैं और मेरा परमात्मा

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला, देहरादून

एक शाश्वत प्रश्न है कि मैं कौन हूं। माता पिता जन्म के बाद से अपने शिशु को उसकी बौद्धिक क्षमता के अनुसार ज्ञान कराना आरम्भ कर देते हैं। जन्म के कुछ समय बाद से आरम्भ होकर ज्ञान प्राप्ति का यह क्रम विद्यालय, महाविद्यालय आदि से होकर चलता रहता है और इसके बाद भी नाना प्रकार की पुस्तकें, धर्मोपदेश, व्याख्यान, पुस्तकों का अध्ययन व स्वाध्याय तथा भिन्न प्रकार की साधनाओं आदि से ज्ञान में वृद्धि होती रहती है। सब कुछ अध्ययन कर लेने के बाद भी यदि किसी शिक्षित बन्धु से पूछा जाए कि कृपया बताएं कि आप कौन हैं या मैं कौन हूं, क्या हूं कहां से माता के गर्भ में आया, फिर मेरा जन्म हो गया, युवा व वृद्ध होने के बाद किसी दिन मेरी मृत्यु हो जाएगी। मृत्यु के बाद मेरा अस्तित्व रहेगा या नहीं। यदि नहीं रहेगा या नहीं। यदि नहीं रहेगा तो क्यों नहीं रहेगा और यदि रहेगा तो कहां व किस प्रकार का होगा, आदि प्रश्नों का समाधान कर दें, तो हम समझते हैं कि आजकल की शिक्षा में दीक्षित किसी व्यक्ति के लिए इन साधारण प्रश्नों का समाधान कारक उत्तर देना सरल कार्य नहीं होगा। इससे तो यही निष्कर्ष निकलता है कि आजकल की शिक्षा अधूरी व अपूर्ण हैं। इसी कारण से लोग आध्यात्मिक जीवन का त्याग कर भौतिक जीवन शैली को अपनाने को विवश हुए हैं। इसके लिए हम तो यहां तक कहेंगे कि हमारे सभी धर्माचार्य इस बात के दोषी हैं कि उन्होंने देश विदेश में आत्मा सम्बन्धी सत्य ज्ञान को स्वयं भी प्राप्त नहीं किया और फिर प्रचार की बात तो बाद की है। जो लोग इस बात का दावा करते हैं कि वह इन प्रश्नों के उत्तर जानते हैं तो फिर वह इनका प्रचार क्यों नहीं करते, क्यों वह भौतिक व आडम्बर पूर्ण जीवन में व्यस्त व तल्लीन हैं, तो इसका उत्तर नहीं मिलता। वह ज्ञान किस काम का जिसका धारक व्यक्ति उसे अन्य किसी को न तो दे और न प्रचार करें। विद्या तो दान देने से बढ़ती है और यदि उसे अपने तक सीमित कर दिया जाए तो व्यवहार में न होने के कारण वह स्वयं भी भूल सकता है और उसके बाद तो उसका विलुप्त होना अवश्यम्भावी है।

इन सभी प्रश्नों के उत्तर पहले वेद एवं वैदिक साहित्य के आधार पर जान लेते हैं। पहला प्रश्न कि मैं कौन और क्या हूं, इसका उत्तर है कि मैं एक जीवात्मा हूं जो अजन्मा, चेतन तत्व, सूक्ष्म, नित्य, अमर व अविनाशी, एकदेशी, कर्मानुसार जन्म व मृत्यु के चक्र में फंसा हुआ, ईश्वर साक्षात्कार कर मुक्ति को प्राप्त होने वाला व मुक्ति की अवधि समाप्त होने पर पूर्व जन्म के अवशिष्ट कर्मों का फल भोगने के लिए जन्म धारण करने वाला है। मेरी यह सत्ता ईश्वर मूल प्रकृति से सर्वथा भिन्न व स्वतन्त्र है। माता के गर्भ में आने पर ईश्वर की प्रेरणा काम करती है। ईश्वर की प्रेरणा से पहले जीवात्मा जो पूर्व जन्म की किसी योनि में मृत्यु को प्राप्त कर अपने कर्मानुसार नये जन्म की प्रतीक्षा में है, पिता के शरीर में आता है। सन्तानोत्पत्ति से पूर्व गर्भाधान के अवसर पर यह पिता के शरीर से माता के शरीर में आता है। माता के शरीर या गर्भ में प्रसव की अवधि तक रहकर यह पुत्र या पुत्री के रूप में जन्म लेता है। शास्त्र यह भी बताते हैं कि जब हमारी मृत्यु होती है, उस समय यदि हमारे पुण्य कर्म पाप कर्मों के बराबर या अधिक होते हैं तो मनुष्य जन्म और यदि पुण्य कर्म कम होते हैं तो फिर पशु, पक्षी व अन्य निम्न योनियों में ईश्वर के द्वारा जन्म मिलता है। इस प्रकार से माता के गर्भ में आने के रहस्य का समाधान हमारे ऋषियों ने शास्त्रों में किया है जो पूर्णत: तर्क व युक्ति संगत है। हमारी जब भी मृत्यु होगी तो हमारे अजन्मा व अमर होने के कारण हमारा अस्तित्व समाप्त नहीं होगा अपितु हम शरीर से निकल कर इस वायुमण्डल व आकाश में एक जीव के रूप में सर्वव्यापक परमात्मा के साथ रहेंगे। यह निवास हमें ईश्वर द्वारा पुन: जन्म देने के लिए हमारी भावी माता के गर्भ में भेजने के समय तक रहेगा। यहां यह प्रश्न भी किया जा सकता है कि यदि ऐसा है तो फिर हमें व अन्यों को पूर्व जन्म की बातें याद क्यों नहीं रहतीं। इसका उत्तर है कि हमारा जो मनुष्य जीवन है उसमें हम एक समय में एक ही बात को स्मरण रख सकते हैं। क्योंकि हम वर्तमान में इस जन्म की बातों व स्मृतियों से भरे हुए रहते हैं, इस कारण पूर्व जन्म की बातें स्मरण नहीं आतीं। दूसरा कारण है कि मृत्यु के बाद हमारा पुराना शरीर व उसमें हमारा जो मन, बुद्धि व चित्त था वह इस जन्म में बदल जाता है और उस जन्म से इस जन्म में बोलना सीखने की लम्बी अवधि में हम पुरानी बातों को भूल जाते हैं। यदि विचार करें तो हमें आज की ही बातें याद नहीं रहती। हम जो बोलते हैं यदि कुछ मिनट व एक घंटे बाद उसे पूरे का पूरा दोहराना हो तो हम पूर्णत: वही शब्द और वही वाक्य दोहरा नहीं सकते हैं। इसका कारण जो शब्द हम बोलते हैं, उसका क्रम साथ-साथ भूलते जाते हैं। हमने प्रात: क्या भोजन किया, दिन में क्या किया, किन-किन से मिले, क्या बातें कीं, क्या पढ़ा, यदि कुछ लिखा तो क्या लिखा, उसे पूरे का पूरा, वैसे का वैसा, क्रमश: नहीं दोहरा सकते। रूक-रूक कर याद करते हैं फिर भी बहुत सी बातें व उनका क्रम भूल जाते हैं। पूर्व दिनों व उससे पहले की घटनाओं को याद करने की बात ही कुछ और है। जब हमें अपने पूर्व के एक सप्ताह के व्यवहार का पूरा ज्ञान व स्मृति नहीं होती तो यदि पूर्व जन्म की स्मृति भी न रहे तो यह कौन से आश्चर्य की बात है। यह साध्य कोटि में है, असम्भव नहीं। अत: पूर्व जन्म के बारे में यह युक्ति कि हमें पूर्व जन्म की बातें याद क्यों नहीं होती, कोई अधिक बलवान तर्क नहीं हैं। अत: इस चिन्तन से हमें अपने स्वरूप का ज्ञान हो गया जो कि वेद शास्त्र सम्मत, बुद्धि, युक्ति आदि से प्रमाणित है।

अब हम अपने परमात्मा को भी जानने का प्रयास करते हैं। हम सभी अपने चारों ओर माता-पिता, कुटुम्बी, मित्रों और सामाजिक बन्धुओं को देखते हैं। इसके साथ हम पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रमा, जल, वायु, अग्नि आदि भिन्न प्रकार के तत्वों को भी देखते हैं। इन्हें देख कर विचार आता है कि सूर्य, चन्द्र व पृथिवी आदि व मनुष्य, पशु व पक्षी, वनस्पति, नदी, जल, वायु, अग्नि आदि को किसने बनाया है? मनुष्य व अन्य किसी योनि के प्राणियों ने तो बनाया नहीं ? किस सत्ता के द्वारा यह बनाए गए हैं, इसका विचार कर निर्णय करना आवश्यक होता है। इसका उत्तर है कि जिस सत्ता ने हमें बनाया है, उसी ने वृक्ष आदि वनस्पतियों व इस सारे जगत एवं इसके सूर्य, पृथिवी, चन्द्र आदि ग्रह-उपग्रहादि सहित उन सभी सांसारिक पदार्थों को भी बनाया है जो कि कोई मनुष्य नहीं बना सकता। ऐसे पदार्थ जो संसार में हैं परन्तु मनुष्यों द्वारा नहीं बनाए जा सके हैं वह अपौरूषेय रचनाएं कहे जाते हैं। इनकी रचना या उत्पत्ति ईश्वर व परम-पुरूष परमात्मा से होती है। अत: यहां पुन: वही प्रश्न उत्पन्न होता है कि यदि उसने बनाए हैं तो वह दिखाई क्यों नहीं देता। उसका उत्तर भी यही है कि सर्वातिसूक्ष्म होने से वह दिखाई नहीं देता। आंखों से केवल स्थूल पदार्थ ही दिखाई देते हैं, सूक्ष्म व परमसूक्ष्म पदार्थ नहीं। वायु और इसमें विद्यमान अणु-परमाणु किसी को कहां दिखाई देते हैं फिर भी इनका अस्तित्व है और सभी इसको स्वीकार करते हैं। त्वचा से स्पर्श होने पर वायु की अनुभूति होती है। इसी प्रकार ईश्वर का दिखाई देना भी उसके कार्यों को देखकर किया जाता है। यदि हम एक सुन्दर सा फूल देखते हैं तो हमें उसकी सुन्दरता व सुगन्ध आकर्षित करती है। हम कितना ही प्रयास कर लें, हम उसी प्रकार की रचना नहीं कर सकते। अत: रचना को देखकर रचयिता का अस्तित्व स्वीकार करना पड़ता है।

यहां एक विज्ञान व दर्शन का नियम भी कार्य करता है जिसे यदि समझ लिया जाए तो गुत्थी हल हो जाती है। नियम यह है कि किसी भी पदार्थ के गुणों का प्रत्यक्ष होता है, गुणी का नहीं। हम फूल के रूप में फूल के रंग-रूप का ही तो दर्शन करते हैं। परन्तु यह तो रंग-रूप व बनावट तो उस फूल के गुण है न कि फूल। गुणों का दर्शन हो रहा है न कि गुणी का। इसके समान गुण हमें जहां मिलते हैं हम उसे अमुक नाम का फूल कह देते हैं परन्तु हमें उस फूल नामी गुणी का प्रत्यक्ष नहीं होता।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

thearyasamaj.org

शारदीय नवस्येष्टि एवं ऋषि निर्वाण दिवस सम्पन्न

उदयपुर में दीपावली से हम अंधकार से लड़कर सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा लें। हृदय में ज्ञान की ज्योति जलाएं। यह आहवान् श्रीमददयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने आर्य समाज हिरण मगरी द्वारा आयोजित शारदीय नवसस्येष्टि एवं ऋषि निर्वाण दिवस पर किया। श्री आर्य ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के राष्ट्रोद्धार एवं वेदोद्धार हेतु समर्पित जीवन पर प्रकाश डालते हुए महर्षि के उपकारों का वर्णन किया।

आरम्भ श्री अनन्त देव शर्मा, उप प्रधान, आर्य समाज हिरण मगरी के पुरोहित्व में सम्पन्न यज्ञ से हुआ। समाज के वरिष्ठजन श्री बसंत लाल कोहली एवं डा. एस. सी. खोसला का 75 वर्ष की आयु प्राप्त करने के उपलक्ष्य में समाज के प्रधान श्री भंवरलाल आर्य, प्रो. डा० अमृत लाल तापड़िया, श्रीमती शारदा गुप्ता, संजय शांडिल्य, मुकेश पाठक व दिनेश अग्रवाल ने श्रीफल, उपर्णा एवं शॉल द्वारा अभिनन्दन किया। श्री इन्द्रदेव पीयूष ने शास्त्रीय शैली में ईश भजन एवं ऋषि भजन-"ऋषिराज तुम तो अकेले जीवन की होली खेले।" प्रस्तुत किये। आभार श्रीमती ललिता मेहरा, मंत्री आर्य समाज हिरण मगरी ने ज्ञापित किया। संचालन समाज के उप मंत्री श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया। समाज का सदस्य श्री इन्द्र प्रकाश यादव द्वारा शांतिपाठ एवं जयघोष के साथ वैदिक पर्व सम्पन्न हुआ।

-भूपेन्द्र शर्मा

बाल दिवस पर विशेष

दयानन्द पब्लिक स्कूल दीपक सिनेमा रोड लुधियाना में 14 नवम्बर 2014 को बाल दिवस बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया। जिसकी शुरूआत गायत्री मंत्र से की गई। गायत्री मंत्र दसवीं कक्षा की प्रियंका, सिल्की, तनवीर ने हाथों में जलते हुए दीए लेकर नृत्य द्वारा पेश किया जिसने सबका मन मोह लिया फिर पांचवीं कक्षा के मेघा, शशांक, दानवी, रॉकी, अमन सागर ने तुम्हीं हो, माता पिता तुम्ही हो पेश किया जिस पर खूब तालियां बजीं। फिर स्कूल के नौनिहालों ने अपनी छोटी-छोटी कविताओं से और नृत्य इन्ना मिन्ना डीका से ऐसा समय बांधा कि सब उन्हें मंत्र-मुग्ध होकर देखते ही रह गए। फिर बारी आई स्किट (नाटिका) को पढ़ना लिखना सीखो जिसे टविंकल, कनिका, प्रिंस आदि ने बड़े अच्छे ढंग से पेश किया फिर बारी आई चाचा नेहरू के जीवन को चित्रित करती हुई स्पीच की जिसे दसवीं कक्षा की मुस्कान ने बाखूबी निभाया। इसके पश्चात् स्कूल के प्रधान श्री संत कुमार जी ने बच्चों को पंडित जवाहर लाल नेहरू जी के बारे में बताते हुए कहा कि वे हमारे देश के पहले प्रधान मन्त्री थे और उन्होंने देश की तरक्की के लिए बहुत कुछ किया। नंगल का भाखड़ा डैम जिससे हमें बिजली मिलती है उन्हीं की देन है और उन्होंने विदेश नीति द्वारा हर एक देश से मित्रता बढ़ाई। फिर स्कूल की प्रिंसीपल श्रीमती सुनीता मलिक ने सब विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए सबको चाचा नेहरू जी के जन्म दिन की बधाई दी और कहा कि पंडित जवाहर लाल नेहरू जी हमारे आज़ाद भारत के पहले प्रधानमन्त्री थे जिन्होंने हमें अमन और शांति का संदेश दिया और कहा कि मेरे मरने के बाद मेरी राख भारत के खेतों में डाल दी जाए। इसके पश्चात् स्कूल के मैम्बर श्री विजय सरीन जी ने भी बच्चों को बाल दिवस के बारे में बच्चों को बताते हुए कहा कि वह छोटे बच्चों से बहुत प्यार करते थे इसलिए बच्चे इन्हें चाचा नेहरू कहते हैं। इसके बाद कमेटी के मैम्बर श्री गोपाल कृष्ण अग्रवाल जी ने भी बच्चों को कहा कि हमें अपने में कांफीडैंस लैवल बढ़ाना चाहिए अगर हममें कांफीडैंस हैं कि हम यह काम कर सकते हैं और कर सकते हैं तभी हम जीवन में आगे बढ़ पाएंगे। फिर शांतिपाठ के पश्चात् प्रोग्राम समाप्त हुआ। सब बड़े बच्चों और स्टाफ के लिए जलपान का अति उत्तम प्रबन्ध था। छोटे बच्चों को खूब अच्छे-अच्छे गिफ्टस देकर विदा किया गया। यह सारा इंतज़ाम स्कूल की कमेटी के मैम्बर श्री गोपाल कृष्ण अग्रवाल जी की तरफ से था।

-रेनू बहल

आर्य समाज वेद मन्दिर कबीर नगर में विशेष हवन यज्ञ का आयोजन

दिनांक 12-10-2014 को आर्य समाज कबीर नगर में विशेष हवन यज्ञ का आयोजन तथा आर्य समाज के अधिकारियों की मीटिंग बुलाई गई। जिसकी अध्यक्षता श्री सरदारी लाल जी आर्यरत्न ने की और कार्यकारिणी का गठन किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज वेद मन्दिर के चेयरमैन श्री ओ.पी. भगत ने अपने विचार रखे और आर्य समाज की गतिविधियों से अवगत कराया। इस हवन यज्ञ में श्री ओ.पी. भगत धर्मपत्नी प्रकाश देवी, बेटा मक्खन लाल धर्मपत्नी गीता रानी पूरे परिवार समेत उपस्थित थे।

-ओ. पी. भगत चेयरमैन आर्य समाज

पृष्ठ 5 का शेष- मैं और मेरा .....

इसी प्रकार से ईश्वर के गुणों को देखकर उसकी पहचान की जाती है। जैसे कि सूर्य में इसकी रचना को देखकर ईश्वर का ज्ञान होता है। सूर्य की रचना उस परमात्मा नामी गुणी का गुण है। इसी प्रकार से फूल को देखकर इसके रचयिता ईश्वर का ज्ञान विवेकशील मनुष्यों को होता है। ऐसा ही सभी जगहों पर माना जा सकता है। दर्शनकार ने ईश्वर की परिभाषा देते हुए कहा है कि जिससे यह संसार जन्म लेता है, जो इसको चलाता है और जो अवधि पूरी होने पर इसका संहार या प्रलय करता है, उसी को ईश्वर कहते हैं। इसी प्रकार से किसी वस्तु के बनाने में तीन कारण होते हैं। पहला निमित्त कारण, दूसरा उपादान कारण और तीसरा साधारण कारण कहलाता है। एक घड़े के निर्माण में कुम्हार निमित्त कारण, मिट्टी उपादान कारण व कुम्हार का चाक व अन्य उपकरण साधारण कारण कहे जाते हैं। इसी प्रकार से संसार को बनाने में ईश्वर निमित्त कारण, मूल प्रकृति उपादान कारण हैं। मनुष्य को अल्पज्ञ व अल्प-शक्तिवान होने के साधारण कारणों, उपकरण आदि का सहारा लेना पड़ा है परन्तु ईश्वर के सर्वव्यापक, सर्वातिसूक्ष्म, सर्वान्तर्यामी व सर्वशक्तिमान होने के कारण उसे साधारण कारणों के रूप में उपकरणों आदि की आवश्यकता नहीं होती। इससे ज्ञात होता है कि संसार की उत्पत्ति ईश्वर से होती है। इसको यदि विस्तृत रूप से जानना हो तो कह सकते हैं कि ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वज्ञ, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। यह ईश्वर का स्वरूप व उसके गुण आदि हैं। यही हमारे परमात्मा का भी स्वरूप है। इसी परमात्मा के द्वारा हमारा यह संसार बना है। इसी से हमारा जन्म व मृत्यु और पुनर्जन्म होता है। हमें हमारे कर्मानुसार जन्म देने के लिए हम ईश्वर के ऋणी हैं। इस ऋण को चुकाने के लिए हमें ईश्वर के प्रति कृतज्ञता का भाव रखकर उसके गुणों का चिन्तन व ध्यान करना है जिससे हमें सत्य व असत्य का ज्ञान हो सके। सत्य का आचरण ही धर्म कहलाता है जिसे वेद व सत्यार्थ प्रकाश आदि शास्त्रों को पढ़कर जाना जा सकता है। आजकल हमारे देश व विश्व में सत्य के साथ असत्य ज्ञान की पुस्तकें भी धर्म ग्रन्थ के नाम से प्राप्तव्य हैं। साधारण ही नहीं अपितु शिक्षित जनों के लिए भी सत्य का निर्धारण करना कठिन कार्य है। इसके लिए वेद, उपनिषद तथा दर्शन आदि ग्रन्थों सहित सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका व संस्कार विधि आदि ग्रन्थ परम सहायक हैं। यदि हम इनका नियमित स्वाध्याय करें तो फिर हमें कहीं किसी गुरू के पास जाने की आवश्यकता नहीं है। ज्ञान हमारी आत्मा में स्वत: उतर आता है। इसका लाभ लेकर हम सत्य का निर्धारण कर सत्य का पालन कर सकते हैं और अपने जीवन को सफल कर सकते हैं।

thearyasamaj.org

डी.ए.एन. कॉलेज ऑफ एजुकेशन फॉर वूमैन में दीक्षान्त समारोह

आर्य समाज नवांशहर के अन्तर्गत संचालित डी. ए. एन. कॉलेज ऑफ एजुकेशन फॉर वूमैन में शुक्रवार 28 नवम्बर को दीक्षांत समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ ज्योति प्रज्वलित कर व सरस्वती वन्दना से किया गया। इसमें कॉलेज में 2008 से 2014 तक शिक्षा ग्रहण कर चुकी 400 छात्राओं को बी. एड. की डिग्रियां दी गई। कार्यक्रम के मुख्य मेहमान मुख्यमन्त्री के मीडिया सलाहकार एवं अकाली दल के महासचिव हरचरण बैंस रहे, जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता गुरू नानक देव युनिवर्सिटी अमृतसर की कॉलेज डिवैल्पमैंट कौंसिल के डीन डा. आर. के महाजन ने की।

नवांशहर के डी.ए.एन कालेज में छात्राएं अपनी डिग्री लेने के बाद मुख्य मेहमान मुख्यमंत्री के मीडिया सलाहकार एवं अकाली दल के महासचिव हरचरण बैंस के साथ फोटो खिंचवाती हुईं। उनके साथ खड़े हैं कालेज के प्रधान श्री विनोद भारद्वाज एवं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज।

इस दौरान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज विशेष मेहमान के रूप में उपस्थित हुए। अपने संबोधन में बैंस ने कहा कि देश को सही दिशा में ले जाने की जिम्मेदारी इन डिग्री लेने वाली छात्राओं पर ही है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज ने कहा कि महर्षि दयानन्द के शिक्षा व नारी उत्थान के किए कार्यों का ऋण समाज कभी नहीं उतार सकता। आज महर्षि के दिखाए मार्ग पर चलकर ही नारी शिक्षा ग्रहण कर समाज में अपना अहम रोल अदा कर रही है। कार्यक्रम में कॉलेज प्रबन्धक कमेटी के प्रधान श्री विनोद भारद्वाज जी ने कहा कि शिक्षा ऐसी चीज है जिसे अन्यों के साथ बांटेगे तो वह बढ़ती ही जाएगी। वही ऐसे कार्यक्रम एक दूसरे को मिलने मिलाने का जरिया भी बनते हैं। अंत में कॉलेज प्रिंसिपल डा. सरोज भल्ला ने सबका आभार जताया। इस मौके पर कॉलेज सैक्रेटरी प्रो. एस. के. बरूटा, नगर कौंसिल के पूर्व प्रधान ललित मोहन पाठक, एडवोकेट जे.के. दत्ता, सोहन सिंह, इन्द्र देव गौतम, आर. के. आर्य कॉलेज के प्रिंसिपल डा. एस. के. बारिया, बी. एल. एम. गर्ल्स कॉलेज की प्रिंसिपल मीनाक्षी शर्मा, रेखा तेजी, गुरविंदर कौर, मीनाक्षी, विकास आदि उपस्थित थे।

–विनोद भारद्वाज अध्यक्ष कॉलेज प्रबन्धक कमेटी

गुरूकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून गेके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व
थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।